अभ्युदय-2026

नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन का आत्मीय आयोजन

ज्ञान

संस्कार

विकास

सहयोग

संकल्प

विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों का नवागतों से खास संवाद

'मैं और मेरा विश्वविद्यालय'

18, 19, 20 अगस्त, 2026

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

पहली बार दो पीढ़ियाँ आमने-सामने

जब 'अभ्युदय 2026' की योजना बनी तो संकट यह था कि पिछली बार से नया और अलग क्या किया जाए। मई में भारत भवन में 'प्रणाम उदंत मार्त्तण्ड' में देश भर से आठ भाषाओं के जाने-माने एडिटर, एंकर, कार्टूनिस्ट, अध्येता, कुलपति और एचओडी आ ही चुके थे। हिंदी पत्रकारिता के 200 साल के उत्सव में मीडिया जगत की 60 से अधिक हस्तियाँ भोपाल आई थीं। विश्वविद्यालय में उस आयोजन की ऊर्जा अब तक रची-बसी थी। ऐसे में सत्रारंभ को अलग ढंग से करने की चुनौती भी थी और अवसर भी।

विश्वविद्यालय की टीम ने तय किया कि इस बार 35 साल में यहीं से पढ़कर निकले सुपर सीनियर्स को बुलाया जाए, जो प्रिंट, टीवी, डिजिटल, रेडियो, सिनेमा, विज्ञापन, पीआर, कम्प्यूटर और प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में सक्रिय हैं या अपने ही सफल उद्यम चला रहे हैं। 50 से अधिक ऐसे पूर्व विद्यार्थियों की सूची सभी एचओडी ने मिलकर बना ली। इसके अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इजिप्ट, सिंगापुर, दुबई और दक्षिण अफ्रीका में जमे पूर्व विद्यार्थियों के जवाब आ गए।

दो हफ्ते के प्रयास से सब के सब जुड़ गए। विदेशों से वे ऑनलाइन जुड़े और देश भर से भोपाल चले आए। सऊदी अरब से एक महाशय 22 साल बाद भोपाल आए। नए परिसर को देखकर सब के सब हृदय से प्रसन्न हुए। एमसीयू की दो पीढ़ियाँ पहली बार एक साथ थीं। अतिथि वक्ता पूर्व विद्यार्थियों के मंच पर स्वागत, सत्रों के संचालन से लेकर सारी गतिविधियों में वर्तमान विद्यार्थी ही आगे रहे। सच्चे अर्थों में यह ग्लोबल मीट जैसा अनुभव था। विद्यार्थियों की सक्रिय टीमें लगातार अपने सीनियर्स की सेवा में उपस्थित थीं। आउटडोर न्यूजरूम के विद्यार्थियों ने तीनों दिन के शानदार अखबार बनाए, वीडियो बुलेटिन जारी किए, रेडियो के लिए कंटेंट तैयार किया और सबके पॉडकास्ट किए। शुभारंभ सत्र में प्रख्यात फिल्म अभिनेता, गीतकार और गायक पीयूष मिश्रा ने जोरदार रंग जमाया। महापरिषद के अध्यक्ष के रूप में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव केबिनेट की मीटिंग के बावजूद न केवल आए बल्कि युवाओं के साथ उनका संवाद ऊर्जा से भरा हुआ था।

इस बार का अभ्युदय अनुभव और संभावनाओं का मनोहारी संगम था। पूर्व विद्यार्थियों के पास अपने संघर्ष की कहानियाँ थीं, उनकी उपलब्धियाँ तो सबको पता ही हैं और नए विद्यार्थियों के पास अपने भविष्य को लेकर जिज्ञासाएं थीं और सवाल थे। तीन दिन के सघन सत्रों की ऊर्जा ने विश्वविद्यालय को नए सत्र की ओर अग्रसर किया है। मैं आशा करूंगा कि देश भर से आए विद्यार्थी इस ऊर्जा को बनाए रखेंगे। अपने हर प्रयोग और हर अभ्यास को स्मरणीय बनाएंगे। सकारात्मक भाव से जीवन में आगे बढ़ेंगे। कोई वजह नहीं है कि कुछ वर्षों बाद वे भी विश्वविद्यालय में अपने संघर्ष और उपलब्धियों की एक नई कहानी लेकर लौटेंगे। सबको शुभकामनाएँ।

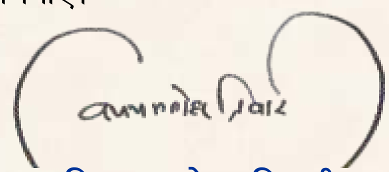

विजय मनोहर तिवारी

27 अगस्त 2026, भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
अभ्युदय -2026
18, 19 एवं 20 अगस्त
नवागत विद्यार्थियों का प्रबोधन
मंगलवार,
18 अगस्त 2026
सुबह 10.30 बजे
गणेश शंकर
विद्यार्थी सभागार
मुख्य अतिथि
डॉ. मोहन यादव जी
माननीय मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष, महापरिषद
मुख्य वक्ता
पीयूष मिश्रा
प्रख्यात लेखक, गीतकार
एवं अभिनेता
instagram.com/mcu_bhopal/
twitter.com/mcu_bhopal
www.facebook.com/mcnujc91
youtube.com/mcubhopal

प्रधान संपादक : विजय मनोहर तिवारी

फोटो : आदित्य चौरसिया, अनंत वशिष्ठ

डिज़ाइन : आकाश सैनी

एमसीयू प्रकाशन

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय

राज्य शूटिंग अकादमी के सामने, बिसनखेड़ी, भोपाल (म.प्र.) 462044,

www.mcu.ac.in, email : publication.mcu@gmail.com | © सर्वाधिकार सुरक्षित

सत्र संरचना

सादर आमंत्रण
अभ्युदय
2026
नवागत विद्यार्थियों के
प्रबोधन का आत्मीय आयोजन
'मैं और मेरा विश्वविद्यालय'
18, 19, 20 अगस्त, 2026
गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार, माखनपुरम्
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

पहला दिन - 18 अगस्त, 2026
मुख्य अतिथि
डॉ. मोहन यादव
श्री पीयूष मिश्रा
अध्यक्ष
श्री विजय मनोहर तिवारी

दूसरा दिन-19 अगस्त, 2026
चतुर्थ सत्र -प्रात: 10.30-12.00 बजे
पंचम सत्र -12.00-1.30 बजे
सातवां सत्र -4.00- 5.30 बजे

तीसरा दिन-20 अगस्त, 2026
नवां सत्र -12.00-1.30 बजे

उद्घाटन सत्र

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन
एवं अध्यक्ष महापरिषद

छात्रों से संवाद

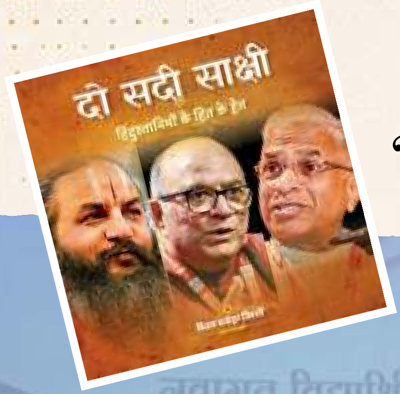

'दो सदी साक्षी' का विमोचन का विमोचन

‘विकल्प’ समाचार पत्र का विमोचन

शुभाशीष

पीयूष मिश्रा

VIP
MCU, BHOPAL

प्रख्यात लेखक, गीतकार एवं अभिनेता
u_bhopal/
twitter.com/mcu_bhopal
www.facebook.com/mcnujc91

इक बगल में चाँद होगा

MINI SHUKLA

फेक न्यूज़ की जगह नेक न्यूज़ को भी जगह मिले

एमसीयू के नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन के तीन दिवसीय आयोजन 'अभ्युदय-2026' का उद्घाटन, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रसिद्ध कलाकार पीयूष मिश्रा हुए शामिल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि युवा 'फेक न्यूज़' के जमाने में 'नेक न्यूज़' वाले मीडिया कर्मी बनें। पत्रकारिता में सत्ता का विरोध ठीक है, लेकिन देश विरोध नहीं होना चाहिए। हमारे लिए न्यूज़ से ऊपर नेशन हो, देश हित को हम सर्वोपरि रखें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन के तीन दिवसीय आत्मीय आयोजन 'अभ्युदय-2026' में मुख्य अतिथि के नाते शामिल हुए। विशिष्ट अतिथि के तौर पर प्रसिद्ध कलाकार पीयूष मिश्रा उपस्थित रहे। अध्यक्षता कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने की।

उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संचार के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में लव-कुश की कथा का वर्णन किया। इसी प्रकार, उन्होंने श्रेष्ठ संचारक के रूप में देवर्षि नारद का उदाहरण भी दिया। वीर सावरकर का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि सावरकर जी ने लंदन जाकर अंग्रेजों को चुनौती दी। उन्होंने 1857 का वास्तविक इतिहास लिखकर सिद्ध किया कि यह सिपाही विद्रोह नहीं अपितु स्वाधीनता का आंदोलन था। सावरकर जी ने हिंदी की भी खूब सेवा की। संसदीय परंपरा के अनेक शब्द सावरकर जी ने दिए हैं। गीतकार कवि प्रदीप का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने अपने गीतों से स्वाधीनता की अलख जगाई, जिसके कारण वे अंग्रेजों के निशाने पर आए। हमारे साहित्यकारों ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया।

स्वागत भाषण में कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि युवाओं को नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए। अपने इतिहास के किरदारों से सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज भी कोई माता-पिता अपने बच्चों का नाम शकुनी और मंथरा नहीं रखते हैं। यह हमारे लिए संकेत है कि हमें सब प्रकार की नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम किसी के अच्छे कार्य में कोई सहयोग नहीं कर सकते, तब कम से कम उनके कामों में बाधक न बनें।

विशेषांक विमोचित :

इस अवसर पर हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' पर केंद्रित पुस्तक 'दो सदी साक्षी है', विकल्प का विशेषांक 'मैं क्लासरूम' और मंदिर की अर्थव्यवस्था पर केंद्रित पत्रिका 'इंडियन कलाईडोस्कोप' का विमोचन किया गया।

प्रतिभा सम्मान :

इस अवसर पर अपने कोर्स में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों- परिधि पुजारी, तमन्ना लश्कर और शिविका गुप्ता को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

प्रथम सत्र

12.30 से 2.00 बजे

'अभ्युदय-2026' के पहले सत्र को पूर्व विद्यार्थी श्यामलाल यादव, पदम भंडारी, डॉ. विश्वेश ठाकरे, संदीप रघुवंशी, शिल्पा अग्रवाल और विकास सिंह ने नवागत विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अपने अनुभव और अपनी यात्रा को साझा किया।

श्यामलाल यादव

पदम भंडारी

डॉ. विश्वेश ठाकरे

संदीप रघुवंशी

शिल्पा अग्रवाल

विकास सिंह

ADITYA KUMAR
CHOURASIA

आरक्षित

18,19 एवं

ADITYA KUMAR

बोधन

डॉ. सुनीता द्विवेदी

डॉ. स्मृति जोशी

द्वितीय सत्र

3.00 से 4.30 बजे

'अभ्युदय-2026' के दूसरे सत्र में पत्रकारिता, विज्ञापन, जनसंपर्क और सिनेमा के क्षेत्र में कार्यरत पूर्व विद्यार्थी मंच पर थे। उन्होंने नवागत विद्यार्थियों को विविध क्षेत्र में आगे बढ़ने की जरूरी जानकारी दी।

धर्मेंद्र भदौरिया

हृदय गुप्ता

डॉ. अंकिता मिश्रा

निशा थरानी

अश्विनी मिश्रा

नवागत
ADITYA KUMAR

तृतीय सत्र | **4.30 से 5.30 बजे**

विश्वविद्यालय में स्किल्स सीखें, आत्मविश्वास अर्जित करें और जीवन की दिशा लेकर आगे बढ़ जाएं

अजय उपाध्याय

पराक्रम शेखावत

सिद्धार्थ मुखर्जी

आदित्य श्रीवास्तव

अचिन्द्र भटनागर

IBM

PODCAST

विश्वविद्यालय में स्किल्स सीखें, आत्मविश्वास अर्जित करें और जीवन की दिशा लेकर आगे बढ़ जाएं

'अभ्युदय-2026' के तीसरे सत्र में पत्रकारिता, कंप्यूटर और तकनीक के क्षेत्र में कार्यरत पूर्व विद्यार्थियों ने अपने उद्बोधन दिए।

वरिष्ठ पत्रकार अजय उपाध्याय ने विश्वविद्यालय से लेकर वर्तमान करियर तक की यात्रा का वर्णन करके विद्यार्थियों को अच्छा करियर बनाने से सूत्र दिए। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता की पढ़ाई हमें दुनिया को 360 एंगल से देखने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

कंप्यूटर के क्षेत्र में कार्यरत अचिन्द्र भटनागर ने कहा कि हमें 'रिस्क टेकर' होना चाहिए। हमारे शिक्षकों ने स्पष्ट रूप से कहा कि सीखने में कोई बहाना नहीं चलेगा। जो उपलब्ध है, उसका बेहतर उपयोग करके सीखें। यहां से स्किल्स सीखकर, आत्मविश्वास लेकर और अपने करियर की दिशा लेकर जाएं।

कंप्यूटर और तकनीक के क्षेत्र में कार्यरत सिद्धार्थ मुखर्जी ने कहा कि विश्वविद्यालय में मुझे 'लर्निंग एप्टीट्यूड' दिया, जो कदम-कदम पर मुझे काम आया। उन्होंने अपने शुरुआती संघर्ष के बारे में बताते हुए नए विद्यार्थियों को सीख दी कि असफलताओं से डरना नहीं है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उसके लिए अपने आप को तैयार करना चाहिए।

टीवी पत्रकार आदित्य श्रीवास्तव ने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने मुझे बताया कि पत्रकार वह है जो दुनिया को जानने की जिज्ञासा रखता है। उन्होंने नए विद्यार्थियों से कहा कि अगले दो साल में उन सभी स्किल्स को सीख लें, जो पत्रकारिता के क्षेत्र में काम आने वाली हैं। जैसे- सबसे पहले हिंदी-अंग्रेजी की टाइपिंग सीख लें, कैमरा हैंडलिंग सीख लें, पीस टू कैमरा का अभ्यास करें। कैंपस सिलेक्शन में भी सामान्य ज्ञान के साथ यही सब बातें पूछी जाएंगी। अपने पाठ्यक्रम के दौरान समाचार की समझ को मजबूत करें। हमें एआई सीखना और उसका सदुपयोग करना है।

टीवी पत्रकार एवं एंकर पराक्रम शेखावत ने कहा कि काम करते समय हमसे गलतियां होंगी, लेकिन अपने आत्मविश्वास को कमजोर नहीं होने देना है। हमें अपनी गलतियां स्वीकार करना चाहिए। गलती स्वीकार करेंगे तभी हम अपनी गलतियों से सीख सकते हैं। एक बात जरूर सीखें कि गलतियों को दोहराना नहीं है। उन्होंने कहा कि हमें अपने आप को कमतर नहीं आंकना है। अधिकतम पढ़ना है, अपनी तैयारी पक्की रखनी है। अगर आपके पास ज्ञान होगा तो किसी भी चुनौती का सामना कर लेंगे। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में संपर्क, संबंध, सम्मान और संवाद बहुत काम आते हैं।

बिहाइंड द कैमरा

पढ़ने के दौरान नौकरी की चिंता न करें, खूब पढ़ें और स्किल्स सीखें

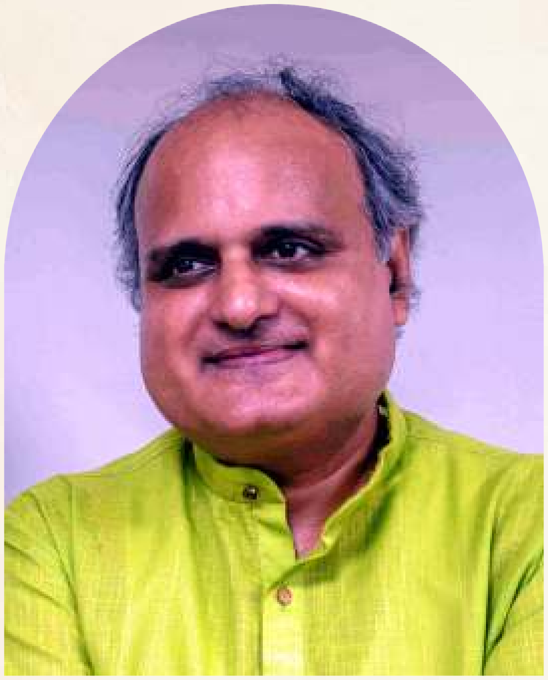

पंकज झा

प्रसून मिश्रा

दुर्गेश सिंह

रवि मिश्रा

अजीत झा

मीनाक्षी शर्मा

लाइट कैमरा एक्शन

गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार

पढ़ने के दौरान नौकरी की चिंता न करें, खूब पढ़ें और स्किल्स सीखें

टीवी पत्रकारिता में सक्रिय एवं एंकर रवि मिश्रा ने विश्वविद्यालय की यात्रा पर लिखी अपनी कविता सुनाई। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में संसाधनों का स्थान तो है लेकिन मूल्यों का महत्व अधिक है। जब हम यहां से पढ़कर निकलें तो कुछ मूल्य लेकर निकलें। उन्होंने कहा कि कमियां सब जगह होती है लेकिन उनके बीच हमें अपना रास्ता बनाकर आगे बढ़कर, अपना स्थान बनाना चाहिए। विश्वविद्यालय से निकले पत्रकार बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

तकनीक प्रबंधन के क्षेत्र में कार्यरत पूर्व विद्यार्थी अजीत कुमार ने कहा कि 22 वर्ष बाद में विश्वविद्यालय में आया हूँ। लगभग 17 साल से विदेश में कार्यरत हूँ। मैं बिहार से सामान्य पृष्ठभूमि से आया। अंग्रेजी भी ठीक नहीं थी। कंप्यूटर पहली बार इसी विश्वविद्यालय में देखा। लेकिन यहाँ से सीखकर आगे बढ़ा। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि नया सीखते रहें।

डिजिटल पत्रकारिता में सक्रिय प्रसून मिश्रा ने विद्यार्थियों से कहा कि आप पढ़ाई के दौरान तीन काम अवश्य करना- 1. फील्ड की जो जरूरत है, उसकी समझ विकसित करना। इसके साथ ही यह भी तय कर लें कि दो साल बाद में करना क्या चाहते हैं। 2. जिस विषय को आप पढ़ रहे हैं, उसकी गहरी समझ विकसित करें। 3. स्किल्स सीखें। जैसे- लिखना, बोलना, कैमेरा संचालन, वीडियो संपादन, लेआउट डिजाइन सीखें। स्किल्स को अच्छा करने के लिए रियाज करें। इसके साथ ही जब आप जॉब में चले जाएं तब अपने एटिट्यूड और टेम्परामेंट पर काम करें क्योंकि वहां से आगे बढ़ने के लिए इनकी जरूरत पड़ेगी।

सिनेमा के क्षेत्र में कार्यरत और वेबसीरीज 'गुल्लक' के लेखक दुर्गेश सिंह ने कहा कि हमें अपनी भाषा, अपनी जमीन और पृष्ठभूमि पर घमंड करना चाहिए। आज मुझे जो भी काम मिल रहा है, उसके पीछे मेरी भाषा, जमीन और पृष्ठभूमि है। उन्होंने कहा कि एआई आपको रिप्लेस करने नहीं आ रहा है। ये टूल्स हैं, इनका उपयोग करते आना चाहिए। दुनिया में इनका उपयोग किया जा रहा है। लेखन में भी एआई का उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमारी धार्मिक कहानियों पर खूब सिनेमा बन रहा है। हमारे दादी-नानी ने जो कहानियां सुनायीं हैं, वे हमारे लिए बहुत महत्व की हैं। मैं संजय लीला भंसाली के साथ के साथ एक फ़िल्म कर रहा हूँ, जो ऐसी ही एक कहानी पर आधारित है।

बिजनिस पत्रकारिता में सक्रिय मीनाक्षी शर्मा ने कहा कि 22 साल बाद विश्वविद्यालय में लौटकर नए विद्यार्थियों से संवाद कर रही हूं तो अपने पुराने दिन याद आ रहे हैं। एक सफल करियर के लिए आपको मजबूत अकादमिक नॉलेज चाहिए। यह ज्ञान इस विश्वविद्यालय में मिलेगा। उन्होंने बताया कि एक दौर में विश्वविद्यालय किराए के भवनों में संचालित होता था, संसाधन बहुत सीमित थे तब भी यहाँ से पढ़कर निकले विद्यार्थी शानदार जगहों पर काम कर रहे हैं। अब तो विश्वविद्यालय में बहुत संसाधन हैं, जिनका लाभ आपको मिलेगा। हमारे शिक्षकों ने केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने पर ही जोर नहीं दिया अपितु उन्होंने जीवन भी सिखाया और करियर गढ़ने में भी दिशा दी। विभाग से प्रकाशित प्रायोगिक समाचारपत्र 'विकल्प' में रिपोर्टिंग करके हमने बहुत कुछ सीखा। आप भी ऐसे अवसरों को पहचाने और खूब सीखें।

राजनीतिक संचार के क्षेत्र में सक्रिय पंकज झा ने कहा कि कुछ लिखना है, पढ़ना है और आगे बढ़ना है तो यह विश्वविद्यालय आपके लिए सबसे उपयुक्त जगह है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि हमें तीन काम अवश्य करना चाहिए- पढ़ना, पढ़ना और पढ़ना।

पहले बैच (1991) के विद्यार्थी संजय सलिल ने ऑनलाइन जुड़कर विश्वविद्यालय की यात्रा पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अत्यंत सीमित संसाधनों से शुरू हुआ यह विश्वविद्यालय आज अपने विशाल परिसर में पहुंच गया है। नवागत विद्यार्थियों से उन्होंने कहा कि कभी रुकियेगा नहीं, चलते रहेंगे तो लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे।

पूर्व विद्यार्थी नीति सुधा ने प्राग से ऑनलाइन जुड़कर नए विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने मनोरंजन पत्रकारिता के सूत्र विद्यार्थियों के साथ साझा

पाँचवाँ सत्र

12.00 से 1.30 बजे

अपने जीवन की मुश्किलों से सीखे सबक नवागत विद्यार्थियों के साथ किए साझा

ओमप्रकाश रजक

नील रूद्रजीत मुखर्जी

ललित कुमार

मिताली उपाध्याय

सुधांशु शेखर

अपने जीवन की मुश्किलों से सीखे सबक

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन के लिए आयोजित 'अभ्युदय 2026' के दूसरे दिन दूसरे सत्र में विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र ओमप्रकाश रजक, नील रुद्रजीत मुखर्जी, सुधांशु शेखर, मिताली उपाध्याय, ललित कुमार ने विद्यार्थियों को अपने जीवन की मुश्किलों से सीखे सबक साझा किए।

फिल्म मेकिंग और स्क्रिप्ट राइटिंग की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाने वाले नील रुद्रजीत मुखर्जी ने अपनी विश्वविद्यालय की कठिन यात्रा को विद्यार्थियों से साझा किया। झारखंड की छोटी सी जगह धनबाद से निकलकर, पढ़ाई के लिए लोन लेने से शुरू हुई यात्रा अब फिल्मों और राइटिंग की दुनिया में अपना नाम बना रही हैं। उन्होंने AI को ठीक तरीके उपयोग करने की सलाह दी और बताया कि आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत सारे प्रोग्राम AI से ही लिखे जा रहे हैं।

'ये जवानी है दीवानी' के रणवीर कपूर से प्रभावित होने से शुरू हुई सुधांशु शेखर की पेशेवर यात्रा आज बड़ी- बड़ी कंपनियों के लिए एडवरटाइजमेंट, क्रिएटिव हेड्स और फिल्म मेकिंग के साथ आगे बढ़ रही है। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि वह टाटा क्रोमा, हिटाची, महिंद्रा एंड महिंद्रा जैसी प्रसिद्ध कंपनियों के लिए विज्ञापन बना चुके हैं और प्राइम वीडियो के लिए भी कई शोज का निर्माण कर चुके हैं। अपने बनाए फीडो प्लेटफार्म के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा ये टूल अभी फ्री है, और एमसीयू के बच्चों के लिए हमेशा फ्री रहेगा।

पत्रकारिता के विश्वविद्यालय से टेक्नोलॉजी की पढ़ाई करने वाली मिताली उपाध्याय ने कम्युनिकेशन की ताकत को आज के समय में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण स्किल बताया। उन्होंने इंटर्नशिप को सॉफ्ट स्किल्स सीखने के लिए लिए सबसे महत्वपूर्ण चरण बताया। विश्वविद्यालय में बिताए अपने समय को याद करते हुए अपने अध्यापकों को उचित मार्गदर्शन देने के लिए आभार व्यक्त किया।

पढ़ाई के दौरान मेरिट स्कॉलरशिप प्राप्त कर चुके पूर्व छात्र ललित कुमार ने विश्वविद्यालय में MCA से शुरू हुई अपनी यात्रा को नवागत विद्यार्थियों के साथ साझा किया। अपने छोटे से सत्र में उन्होंने कहा कि AI को वैसाखी न बनाए और अन्य प्रचलित विदेशी भाषाओं को सीखने का प्रयास करें।

अलेक्स मीडियाटेक के संस्थापक, पूर्व विद्यार्थी ओमप्रकाश रजक ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि कॉलेज के दिनों में की गई तैयारी ही आने वाले दिनों में सबसे बड़ी पूंजी होगी। किसी भी फील्ड में काम का तरीका अलग हो सकता है परन्तु भविष्य में आने वाली कठिनाइयों को सुलझाने में इस समय सीखा हुआ कोई गुण ही उपयोगी होगा। विद्यार्थियों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि नौकरी या व्यापार में केवल उतना काम न करे जितना आपसे करने को कहा जाए।अपनी तरफ से हमेशा कुछ ज्यादा करने की कोशिश करें। उन्होंने संदेश दिया कि जब तक हम ज्यादा नहीं देंगे तब तक हमें ज्यादा नहीं मिलेगा।

छठवाँ सत्र

2.30 से 4.00 बजे

पढ़ने के दौरान नौकरी की चिंता न करें, खूब पढ़ें और स्किल्स सीखें

शिखा शर्मा सुशील अग्रवाल अपर्णा झा

et connection was

सुश्री शिखा शर्मा

माखन के लाल
माखन के लाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
अभ्युदय-2026

पढ़ने के दौरान नौकरी की चिंता न करें, खूब पढ़ें और स्किल्स सीखें

'अभ्युदय-2026' के दूसरे दिन तीसरे सत्र में विज्ञापन और पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय पूर्व विद्यार्थियों ने नवागत विद्यार्थियों को संबोधित किया।

विज्ञापन के क्षेत्र में सक्रिय सुशील अग्रवाल ने कहा कि मैंने विश्वविद्यालय से 'समाचार पत्र प्रबंधन' का डिप्लोमा कोर्स किया था। इस कोर्स ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। मीडिया की समझ लेकर मैंने विज्ञापन के क्षेत्र में काम करना प्रारंभ किया। पहले एक समाचार पत्र के विज्ञापन विभाग में काम शुरू किया, उसके बाद अपनी स्वयं की विज्ञापन एजेंसी शुरू की। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आपमें संघर्ष करने की क्षमता है और एक लक्ष्य लेकर चलते रहेंगे तो एक दिन सफलता जरूर मिलेगी। उन्होंने कहा कि भारत में रोजगार के बहुत अवसर हैं। इसलिए आपके पास बहुत अवसर हैं।

लोकलाइजेशन इंडस्ट्री में कार्यरत शिखा शर्मा ने कहा कि मैंने विश्वविद्यालय में जो कुछ सीखा उसके कारण मीडिया में आत्मविश्वास से काम कर सकी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि अधिक से अधिक स्किल्स सीखिए। आज के दौर में एक स्किल पर निर्भर नहीं रह सकते। उन्होंने विद्यार्थियों को लोकलाइजेशन इंडस्ट्री की जानकारी दी। इस फील्ड में अब एआई भी आ गया है। इसलिए हमें एआई का उपयोग सीखना चाहिए। एआई को भाषा सीखने का काम भी तो हम भाषा के जानकार लोग ही करते हैं।

बिजनेस पत्रकारिता में सक्रिय अपर्णा झा ने कहा कि पढ़ाई के दौरान अपने रुचि के क्षेत्र चिन्हित कीजिए। रुचि का काम करने का अवसर बने तो आनंद आता है। उन्होंने कहा कि जितना हो सकता है, पढ़िए। हमें मोबाइल की आदत हो गयी है, जिसके कारण किताबें हमारे हाथ से छूट रही हैं। मेरे सुझाव है कि स्क्रीन टाइम कम करके किताबें पढ़िए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि एआई के हाथों खेलने की जगह एआई के साथ खेलिए।

1998-2000 बैच की विद्यार्थी तारिका ने अमेरिका से, 2002-2004 बैच के विद्यार्थी विनोद नागर ने दुबई से और 2011-2013 के बैच के छात्र सुमित रंजन ने प्राग से, 2013-2017 बैच के विद्यार्थी इजिप्ट से आशीष सिंह ने और मंतोष सिंह ने दुबई से ऑनलाइन जुड़कर संदेश दिया।

सातवाँ सत्र

4.00 से 5.30 बजे

व्यक्तिगत और संस्थागत ऑथेंटिसिटी और इंटेग्रिटी बनाकर रखें

सुमित पांडेय

आनंद पांडेय

दीपक पगारे

एवं

प्रबोधन

18, 19 एवं 20 अगस्त

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
अभ्युदय-2026
18,19 एवं 20 अगस्त
नवागत विद्यार्थियों का प्रबोधन

आनंद पांडेय एवं डॉ. संजीव गुप्ता

व्यक्तिगत और संस्थागत ऑथेंटिसिटी और इंटेग्रिटी बनाकर रखें

'अभ्युदय-2026' के दूसरे दिन के चौथे सत्र में वरिष्ठ पत्रकार आनंद पांडेय, दीपक पगारे और सुमित पांडेय ने नवागत विद्यार्थियों को संबोधित किया।

डिजिटल पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार आनंद पांडेय ने कहा कि एआई आपकी मौलिकता खत्म न करे, यह ध्यान रखें। एआई ऐसा टूल है जिसने हमारा काम सरल किया है। पहले जिस काम को करने में घंटों का समय लगता था, अब एआई की सहायता से आप उसे मिनटों में कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस समय में आपको व्यक्तिगत और संस्थागत भी ऑथेंटिसिटी और इंटेग्रिटी बनाकर रखना जरूरी है। उन्होंने कहा कि यदि आप अपना ब्रांड बनाना चाहते हैं तो इन दोनों बातों को अपनाना होगा। हम जैसा बोलते हैं, वैसा ही हमें करना और दिखना चाहिए। उन्होंने कंटेंट क्रिएटर और पत्रकार में अंतर बताया। कंटेंट क्रिएटर केवल सूचना दे सकता है। जबकि पत्रकार सोचता है, उसके बाद सूचना देता है। उन्होंने कहा कि सोचने के लिए पढ़ना जरूरी है। एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए भी पढ़ना जरूरी है। पढ़ेंगे तो सोचेंगे, सोचेंगे तो सवाल करेंगे। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि विश्वविद्यालय के संसाधनों का अधिकतम उपयोग करें। श्रवण करें, मनन करें और निदिध्यासन करें। आपके शिक्षकों के पास एक लंबा अनुभव है, उनसे सीखें। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में बहुत अवसर हैं, लेकिन क्या हम उन अवसरों के लिए तैयार हैं।

पहले बैच के विद्यार्थी और वरिष्ठ पत्रकार दीपक पगारे ने बताया कि इस विश्वविद्यालय की स्वीकार्यता और लोकप्रियता निरंतर बढ़ती गई है। 'मैं और मेरा विश्वविद्यालय' बहुत बड़ा विषय है, जिसको शब्दों में बांधना कठिन है। विश्वविद्यालय में हमें जो व्यवहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान मिला, उसने हमारा जीवन बनाया है। उन्होंने कहा कि गूगल और तकनीक हमारा सहायक है, उसे अपना मालिक नहीं बनाना है। उन्होंने यह भी कहा कि कला पत्रकारिता में बहुत अवसर हैं। नए विद्यार्थी इस क्षेत्र में तैयारी के साथ आएं।

डिजिटल मीडिया में कार्यरत वरिष्ठ पत्रकार आनंद पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में सीखने की प्रक्रिया ही आपको अच्छा पत्रकार बनाएगी। विश्वविद्यालय में विभिन्न अवसरों पर कुमार विश्वास, पीयूष मिश्रा जैसे दिग्गज आते हैं, हमें उनकी यात्रा से सीखना चाहिए। उन्होंने सिंहस्थ कवरेज के अपने अनुभव सुनकर बताया कि इस तरह के बड़े आयोजनों को किस तरह कवर किया जाता है। उन्होंने कहा कि एक अच्छा पत्रकार वह होता है, जो पाठकों को केंद्र में रखकर समाचार बनाता है।

आठवाँ सत्र

10.30 से 12.00 बजे

20 अगस्त 2026, Day 3

पत्रकारिता ग्लैमर जॉब नहीं, जिम्मेदारी का कार्य है

अनिल पाण्डेय

मृत्युंजय कुमार झा

सचिन जैन एवं
कृष्ण मोहन मिश्रा

प्रकाश पंत

पत्रकारिता ग्लैमर जॉब नहीं, जिम्मेदारी का कार्य है

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन कार्यक्रम 'अभ्युदय-2026' में तीसरे दिन देशभर से आये पूर्व विद्यार्थियों ने नवागत विद्यार्थियों को संबोधित किया।

बिजनेस पत्रकारिता में चर्चित पत्रकार मृत्युंजय झा ने कहा कि क्लास रूम से निकल कर आप न्यूज़ रूम में जाएंगे, इसकी जानकारी होनी चाहिए। न्यूज़ रूम में जाने से पहले हिन्दी-अंग्रेजी की टाइपिंग, समाचार लिखने का कौशल, स्क्रिप्ट लिखना और ग्राफिक्स लिखने का कौशल सीख लीजिये। अगर आपके अंदर रचनात्मकता है तो एआई आपको रिप्लेस नहीं करेगा। एआई आपका सहयोगी है। उस पर इतने निर्भर न हों कि आपकी रचनात्मकता खत्म जो जाए। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता ग्लैमरस जॉब नहीं है। इस भ्रम से बाहर निकलना जरूरी है। यह एक जिम्मेदारीपूर्ण कार्य है। उन्होंने कहा कि बिजनेस पत्रकारिता में अगर हम एक गलत डेटा बोल दें तो उसका सीधा असर मार्केट पर पड़ सकता है।

1992 बैच के विद्यार्थी एवं वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश पंत ने कहा कि पत्रकारिता में काम करने के लिए जुनूनी होना जरूरी है। अभी हमें भविष्य की चिंता करने की जगह अधिक से अधिक पढ़ना चाहिए। आज एक क्लिक पर एआई जानकारी दे देता है लेकिन मैं कहूंगा कि आप किताबें पढ़ने की आदत डालिये। उन्होंने कहा कि हम सबको भारत का संविधान जरूर पढ़ना चाहिए। 1915 से लेकर आज तक का भारत का इतिहास पढ़िए। आधुनिक भारत के निर्माताओं के बारे में पढ़िए। इसके साथ ही इसी कालखंड का विश्व इतिहास पढ़ें और जाने की प्रथम विश्व युद्ध से अब तक दुनिया किस तरह बदली है।

रक्षा पत्रकारिता के चर्चित नाम कृष्णमोहन मिश्रा ने कहा कि मैं सेना में जाना चाहता था, वहां नहीं जा सका तो पत्रकारिता में आकर सेना के समीप रहकर काम किया। मैंने अपनी रुचि से डिफेंस रिपोर्टिंग चुनी है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आप भी अपनी रुचि का क्षेत्र चुनिए। आप जिस व्यवसाय में आ रहे हैं, वह ज्ञान आधारित है। इसलिए यहां अध्ययन का कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा कि डिफेंस रिपोर्टिंग आगे भी रहने वाली है क्योंकि मनुष्य की फितरत है कि वह हमेशा से युद्ध करते आ रहा है। हम बचपन से युद्ध की कहानियां सुनते आ रहे हैं। यानी युद्ध की कहानियों में हमारी दिलचस्पी रहती है। उन्होंने कहा कि नवागत विद्यार्थियों को कहा कि पत्रकारिता के क्षेत्र में हमें स्वयं को फिजिकली, मेंटली और इमोशनली मजबूत रखना पड़ेगा।

डिजिटल पत्रकारिता के चर्चित नाम अनिल पांडेय ने कहा कि मीडिया इंडस्ट्री में बहुत जॉब हैं लेकिन उनके लिए कुशल लोगों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पढ़ने के साथ-साथ सीखना नहीं छोड़ना। आज के समय में वीडियो शूट करने के लिए कैमरा की आवश्यकता नहीं है बल्कि आप मोबाइल फोन से भी अच्छे वीडियो शूट कर सकते हैं। हमें इस प्रकार से शूट करना चाहिए कि संपादन की आवश्यकता कम रहे।

एनजीओ क्षेत्र में कार्यरत एवं विकास पत्रकारिता के चर्चित चेहरे सचिन जैन ने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने मुझे विकास संचार और विश्लेषण की क्षमता दी। उसके कारण मुझे विकास संचार क्षेत्र में काम करने की दिशा मिली। उन्होंने कहा कि संचार के कौशल का उपयोग हमें किसके लिए करना है, यह विचार करना चाहिए। हमें 'Me' से 'We' के रूप में अपनी भूमिका देखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें विश्वविद्यालय में 5W और 1H का सिद्धांत बताया। यह सिद्धांत केवल समाचारों के निर्माण तक सीमित नहीं है। समाज को समझने में भी यह सिद्धांत कार्य करता है। पत्रकारिता का काम है सूचित करना, शिक्षित करना और प्रोत्साहित करना। इस सिद्धांत की दृष्टि में हमें यह विचार करना चाहिए कि समाज किन विषयों के बारे में और किस तरह सूचित करना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में सबसे महत्वपूर्ण कौशल है- ऑब्जर्वेशन। जितना अच्छा हमारा ऑब्जर्वेशन होगा, हम उतने अच्छे पत्रकार बनेंगे।

इसी सत्र में पूर्व विद्यार्थी एन. हरि प्रकाश ने केन्या से ऑनलाइन जुड़कर नवागत विद्यार्थियों के साथ अपने करियर की यात्रा साझा की।

नवां सत्र

12.00 से 1.30 बजे

पूर्व विद्यार्थियों ने सिखाये ब्रांड प्रमोशन के टिप्स

सुलभ सिंह | आशीष चौहान | अमित कौसरवाल | कविता कौसरवाल | आयुषी श्रीवास्तव

18, 19 एवं 20

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
अभ्युदय-2026
18,19 एवं 20 अगस्त
नवागत विद्यार्थियों का प्रबोधन

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय,
अभ्युदय

PODCAST

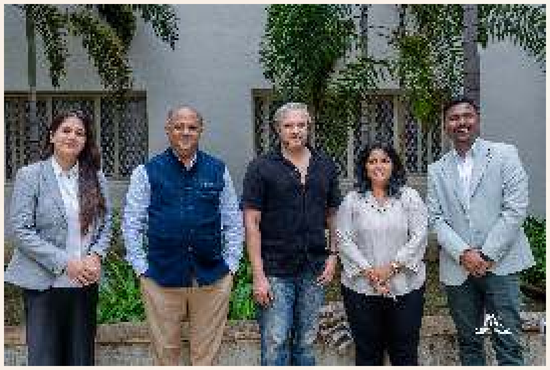

भोजन सत्र

पेट पूजा

पूर्व विद्यार्थियों ने सिखाये ब्रांड प्रमोशन के टिप्स

भारत की बड़ी राजनीतिक पार्टियों के लिए सफल कैंपेनिंग कर चुके सुलभ सिंह ने किरदार, कहानी और किस्सों के माध्यम से अपनी यात्रा विद्यार्थियों से साझा किया। बहुत सारी असफलताओं से भरे अपने करियर के किस्से बताते हुए उन्होंने बताया कि कैसे 25 की उम्र में पैसे कमाने की जिद ने उनकी आज की सफलता की कहानी लिखी। सफलता के सूत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि अपने किसी भी हुनर के लिए पैसा मांगने की कला होनी चाहिए। अगर आपको आपका किया हुआ काम बेचना नहीं आता तो आप सफलता से बहुत दूर हैं। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी असफलताओं से सीखा। जब मैं विश्वविद्यालय आया तो तय करके आया था कि नौकरी नहीं करूंगा, अपना व्यवसाय करूंगा। इस विश्वविद्यालय में मैंने बहुत कुछ सीखा।

क्रिएटिव कैम्पेन और विज्ञापन के क्षेत्र में कार्यरत कविता कौसरवाल ने कहा कि अगर आपको कुछ नया करना है तो लोगों से मिलना और बात करना पड़ेगा। वहीं से नई कहानियां मिलेंगी। उन्होंने कहा कि हमें ईमानदार होना पड़ेगा। हम जो नहीं जानते उसे ईमानदारी से स्वीकार करेंगे तभी उसे सीख सकते हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सामाजिक मूल्यों में गिरावट देखी जा रही है। हमें सामाजिक मूल्य सीखने चाहिए। एक खास किस्से को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि नौकरी के पहले ही दिन रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस का काफिला रोक कर इंटरव्यू किया था। कन्नड़ भाषा और विधानसभा की कवरेज के किस्सों के माध्यम से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

क्रिएटिव फील्ड के चर्चित नाम अमित कौसरवाल ने कहा कि मैंने सवालों के उत्तर नहीं पूछे बल्कि सवालों के सवाल पूछे। संचार, ब्रांड प्रमोशन और विज्ञापन के क्षेत्र में वही व्यक्ति सर्वाइव कर सकता है जो इस बारे में अपडेट रहता है कि लोग क्या सोच रहे हैं, वे क्या कर रहे और क्या देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में सबसे अच्छी पुस्तक है- लोगों को पढ़ना। ब्रांड प्रमोशन का सबसे बड़ा तरीका है कि ब्रांड को लोगों के इमोशन के साथ जोड़ना। हमें ब्रांड बनाने की जगह ह्यूमन कनेक्शन बनाने पर ध्यान दें, ब्रांड अपने आप बन जायेगा।

डिजिटल मार्केटिंग में कार्यरत आयुषी श्रीवास्तव ने कहा कि आपको मल्टी टास्किंग सीखनी होगी क्योंकि इस फील्ड में आपको एक साथ कई काम मैनेज करने होंगे। आपको आलोचना सहन करने की क्षमता भी विकसित करनी होगी। उन्होंने कहा कि आपको उच्च दबाव में काम करना होगा। बिजनेस शुरू करने से पहले एक बार काम और सिस्टम को समझने के लिए जॉब जरूर करें।

जनसंपर्क के क्षेत्र में कार्यरत आशीष चौहान ने कहा कि जनसंपर्क के क्षेत्र में काम करने से पहले आप सोचें कि आप क्या करना चाहते हैं। आप जो काम करना चाहते हैं, उसके लिए कौन-सी स्किल्स आवश्यक हैं, उनको चिन्हित करें और सीखें।

समापन सत्र

2.30 से 4.30 बजे

समाज को देखने और समझने की दृष्टि देती है पत्रकारिता

देवरूप आर्या

आशुतोष सिंह

कुमार सौरभ

अभिषेक बेहरा

मुख्य अतिथि

रजनीश कुमार अग्रवाल

पूर्व छात्र एवं राज्यसभा सांसद

‘सदी साक्षी है’ प्रदर्शनी का अवलोकन करते रजनीश कुमार अग्रवाल

अगस्त

ADITYA KUMAR

एक पौधा नई पीढ़ी के नाम

अजित डोभाल का शुभकामना संदेश

देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने एमसीयू के विद्यार्थियों के नाम पत्र भेजा

समाज को देखने और समझने की दृष्टि देती है पत्रकारिता : श्री रजनीश अग्रवाल

माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन का तीन दिवसीय कार्यक्रम 'अभ्युदय-2026' का समापन, राज्यसभा सांसद श्री रजनीश अग्रवाल बतौर मुख्य अतिथि हुए शामिल

भोपाल। राज्यसभा सांसद श्री रजनीश अग्रवाल ने एमसीयू के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मैंने एमसीयू में पत्रकारिता के अध्ययन के दौरान जो कुछ पढ़ा-सीखा, वह सब राजनीतिक क्षेत्र में मुझे काम आया। पत्रकारिता की पढ़ाई ने मुझे समाज को देखने और समझने की दृष्टि दी है। वे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के नवागत विद्यार्थियों के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। श्री अग्रवाल एमसीयू के पूर्व विद्यार्थी हैं। यहीं से उन्होंने पत्रकारिता का अध्ययन किया है।

राज्यसभा सांसद श्री अग्रवाल ने कहा कि मैं किसी संयोगवश या बिना विचार किए पत्रकारिता का अध्ययन करने नहीं आया था अपितु मैंने विचारपूर्वक पत्रकारिता की पढ़ाई चुनी। उन्होंने कहा कि समाज में क्या घट रहा है, क्यों घट रहा है, इसको समझने की दृष्टि पत्रकारिता देती है। अपनी संस्कृति, परंपरा और समाज से जुड़ने का अवसर भी पत्रकारिता देती है। उन्होंने कहा कि सभी व्यवसायिक क्षेत्रों में नैतिकता और मूल्य हैं, इसलिए सब टिके हुए हैं। प्रत्येक क्षेत्र में कहीं न कहीं नैतिकता और मूल्य हैं। समाज में संवाद और संवाद कला के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया में कोई भी संवाद के बिना नहीं रह सकता। हमारे जीवन में संवाद कला का बहुत महत्व है। प्रत्येक क्षेत्र में संवाद कला का लाभ मिलता है।

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता अनिश्चिताओं का क्षेत्र है, जहां संघर्ष है। 'अभ्युदय' में आये पूर्व विद्यार्थियों की सफलता की कहानियां बताती हैं कि वे सब संघर्ष से एक मुकाम तक पहुंचे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि अभ्युदय के इन तीन दिनों के कार्यक्रम में जिस ऊर्जा की अनुभूति आपने की है, उसे अपने पाठ्यक्रम के दौरान बनाए रखें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से निकले विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में परचम फहरा रहे हैं।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार आशुतोष कुमार सिंह ने कहा कि हमारे शिक्षकों ने हमें अनुशासन सिखाया, जिसका लाभ हमें अपने कार्यक्षेत्र में मिल रहा है। उन्होंने कहा कि कंटेंट और भाषा पर अपनी पकड़ बनाएं, यह आपको आत्मविश्वास देगा। अपनी क्षमता को पहचान कर काम चुनिए। वहीं, शिक्षाविद एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री कुमार सौरभ ने कहा कि हम कठिन लक्ष्य लेकर आगे बढ़े। बड़े सपने देखें। आप जो चाह लेते हो, वह हो जाता है। उन्होंने कहा कि कौन पढ़ रहा है, कौन लिख रहा है, यह भूल जाओ केवल अपने लिए लिखो। खूब लिखो, यह आपको निखारेगा।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के पूर्व विद्यार्थी श्री देवरूप आर्या ने कहा कि एमसीयू में पढ़ाई से मुझे जो आत्मविश्वास मिला, उसका परिणाम रहा कि मैं आज तक एक भी इंटरव्यू में असफल नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने मुझे केवल एक प्रोफेशन नहीं दिया, अपितु एक पर्सनालिटी दी है। इसके साथ ही आईटी के क्षेत्र में कार्यरत श्री अभिषेक बेहरा ने भी अपने विचार साझा किए। अंत में, आभार प्रदर्शन कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला ने किया।

अभ्युदय के सूत्रधार डॉ.अविनाश वाजपेयी
और कुलसचिव डॉ. पी. शशिकला

अभ्युदय के समापन के बाद विश्वविद्यालय से प्रस्थान करते हुये विद्यार्थियों के बीच कुलगुरु

अब मिलते हैं क्लास में

मीडिया कवरेज

स्वदेश
NEWS CLIPPING SERVICE FROM MCNUJC LIBRARY
भोपाल - संस्करण
21 AUG 2026

एमसीयू के 'अभ्युदय-2026' कार्यक्रम का समापन

पत्रकारिता समाज को देखने और समझने की दृष्टि देती है : अग्रवाल

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन कार्यक्रम 'अभ्युदय-2026' का समापन हुआ।

समापन समारोह में राज्यसभा सांसद रजनीश अग्रवाल ने कहा कि पत्रकारिता की पढ़ाई ने उन्हें समाज को देखने और समझने की दृष्टि दी, जिसका लाभ राजनीतिक जीवन में भी मिला। उन्होंने विद्यार्थियों से पत्रकारिता को विचारपूर्वक अपनाने और समाज, संस्कृति व परंपराओं से जुड़कर सीखने का आह्वान किया।

संघर्ष से सफलता तक पहुंचने की प्रेरणा

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता संघर्ष और अनिश्चितताओं का क्षेत्र है। 'अभ्युदय' में पूर्व विद्यार्थियों की सफलता की कहानियां संघर्ष से मुकाम हासिल करने की प्रेरणा देती हैं।

खबर में सटीकता और अभ्यास जरूरी

बिजनेस पत्रकार मृत्युंजय झा ने कहा कि गलत आंकड़े का सीधा असर बाजार पर पड़ सकता है। वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के विद्यार्थी प्रकाश पंत ने विद्यार्थियों को प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ने और लेखन, वीडियो व ऑडियो का नियमित अभ्यास करने की सलाह दी। रक्षा पत्रकार कृष्ण मोहन मिश्रा ने रक्षा पत्रकारिता में रुचि और संभावनाओं पर बात की। डिजिटल पत्रकार अनिल पांडेय ने मोबाइल से प्रभावी वीडियो निर्माण की तकनीक बताई।

पूर्व विद्यार्थियों ने साझा किए सफलता के मंत्र... विकास संवाद के निदेशक सचिन जैन ने अवलोकन को पत्रकारिता का सबसे महत्वपूर्ण कौशल बताया। चेन्नई से ऑनलाइन जुड़े एन. हरि प्रकाश ने अपनी करियर यात्रा साझा की। जनसंपर्क विशेषज्ञ आशीष चौहान, डिजिटल विपणन विशेषज्ञ आयुषी श्रीवास्तव, विज्ञापन क्षेत्र के अमित कौसरवाल, आरकॉम की प्रबंध संचालक कविता कौसरवाल, राजनीतिक अभियान विशेषज्ञ डॉ. सुलभ सिंह, देवरूप आर्य, अभिषेक बेहरा, प्रधानमंत्री कार्यालय में पदस्थ दूरदर्शन न्यूज संवाददाता आशुतोष कुमार सिंह और कुमार सौरभ ने भी विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया। कुलसचिव प्रो. पी. शशिकला ने आभार व्यक्त किया।

एमसीयू में 'अभ्युदय-2026' का समापन

पत्रकारिता ने समाज को देखने और समझने की दृष्टि दी : रजनीश

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
DAINIK NAIDUNIA 21-08-2026

एमसीयू के सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' का समापन, पूर्व छात्रों ने साझा किए अनुभव

समाज को देखने और समझने की दृष्टि देती है पत्रकारिता : रजनीश अग्रवाल

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

स्वदेश ज्योति

एमसीयू में नवागत विद्यार्थियों के प्रबोधन कार्यक्रम 'अभ्युदय 2026' का समापन, पूर्व विद्यार्थियों ने साझा किए अनुभव

समाज को देखने और समझने की दृष्टि देती है पत्रकारिता : रजनीश अग्रवाल

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में नवागत विद्यार्थियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय प्रबोधन कार्यक्रम 'अभ्युदय 2026' का समापन हुआ। समापन अवसर पर देशभर में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहे विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों ने नवागत विद्यार्थियों से संवाद किया और पत्रकारिता, जनसंपर्क, विज्ञापन, डिजिटल माध्यम, विकास संचार, रक्षा पत्रकारिता सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद रजनीश अग्रवाल ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पत्रकारिता का अध्ययन केवल रोजगार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज को देखने और समझने की दृष्टि विकसित करता है। रजनीश अग्रवाल ने कहा कि उन्होंने विश्वविद्यालय में पत्रकारिता की पढ़ाई सोच-विचारकर चुनी थी। पत्रकारिता के अध्ययन के दौरान उन्होंने जो कुछ पढ़ा और सीखा, उसका लाभ उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में भी मिला। उन्होंने कहा कि समाज में क्या घट रहा है और उसके पीछे कारण क्या हैं, इसे समझने की दृष्टि पत्रकारिता देती है। पत्रकारिता के माध्यम से व्यक्ति अपनी संस्कृति, परंपराओं और समाज से भी गहराई से जुड़ता है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि प्रत्येक व्यवसाय और कार्यक्षेत्र के पीछे कुछ नैतिक मूल्य होते हैं और इन्हीं मूल्यों के कारण संस्थाएं तथा क्षेत्र लंबे समय तक टिके रहते हैं। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया।

रुचि के अनुसार क्षेत्र चुनने की सलाह

पत्रकारिता में छोटी गलती का भी बड़ा प्रभाव

अच्छा पत्रकार बनने के लिए जरूरी है बेहतर अवलोकन

लोगों को समझना संचार की सबसे बड़ी जरूरत

अनुशासन और भाषा पर पकड़ से बढ़ता है आत्मविश्वास

संघर्ष से ही सफलता तक पहुंचने की राह

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

अभ्युदयः लम्बी यात्रा की पहली सीढ़ी

ज्योति शुक्ला, 3 MABJ ,इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग

अभ्युदय 2026 की शुरुआत हम सबके लिए किसी नए अध्याय के पहले पन्ने जैसी थी। नए चेहरे थे, नई उम्मीदें थीं और मन में भविष्य को लेकर कई सवाल थे। ऐसा लगा मानो विश्वविद्यालय ने न केवल अपना सेमेस्टर शुरू किया है, बल्कि हमारे जीवन के अगले अध्याय भी शुरू कर दिए हैं। जैसे विश्वविद्यालय ने हमारे सामने सिर्फ अपना परिसर नहीं, बल्कि संभावनाओं की एक पूरी दुनिया खोल दी हो।

अभ्युदय का मंच उन तीन दिनों में एक ऐसे दर्पण में बदल गया, जिसमें हमने अपने आज के साथ-साथ अपने आने वाले कल की तस्वीर भी देखी। इस दर्पण में सबसे खूबसूरत तस्वीर थे हमारे alumni, वे लोग जिन्होंने कभी इसी विश्वविद्यालय की कक्षाओं में बैठकर अपने सपने देखे थे और आज अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुके हैं।

कार्यक्रम को और खास बनाया देश और प्रदेश की जानी-मानी हस्तियों की मौजूदगी ने। भोपाल के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का हम विद्यार्थियों के बीच आना और हमारा उनके विचार सुनना एक महत्वपूर्ण अनुभव रहा। वहीं प्रसिद्ध लेखक पीयूष मिश्रा ने अपनी बातों से सभागार में रंग भर दिया। लेकिन अभ्युदय की असली खूबसूरती सिर्फ मंच पर नहीं थी। असली कहानी तो मंच के पीछे लिखी जा रही थी। मीडिया के विद्यार्थियों के लिए ये तीन दिन किसी जीवंत न्यूज़रूम से कम नहीं थे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग ने हर दिन की गतिविधियों को बुलेटिन का रूप दिया।

जर्नलिज्म विभाग ने, आयोजन की खबरों और गतिविधियों को समाचार-पत्र के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया। वहीं रेडियो विभाग ने 'कर्मवीर' के लिए प्रसारण तैयार किया। यानी अभ्युदय की कहानी केवल मंच पर कही नहीं गई, बल्कि कैमरे, कागज और आवाज तीनों माध्यमों से दर्ज की गई।

अगर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कैमरा था, तो जर्नलिज्म उसकी कलम और रेडियो उसकी आवाज। और इन तीनों ने मिलकर अभ्युदय की कहानी को एक ऐसा मीडिया कैनवास दिया, जिस पर हर दिन एक नया अनुभव रंग भर रहा था। मीडिया कवरेज का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा रहा एलुमनाई पॉडकास्ट। विद्यार्थियों को पूर्व विद्यार्थियों से सीधे और अनौपचारिक संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। पॉडकास्ट के जरिए विद्यार्थियों ने अपने एलुमनाई की यात्रा, उनके अनुभव, चुनौतियों और मीडिया क्षेत्र से जुड़े उनके विचारों को विस्तार से समझा।

इस आयोजन की सबसे बड़ी खूबसूरती यही रही कि विद्यार्थी यहां सिर्फ दर्शक बनकर नहीं आए थे। हम इस कहानी के किरदार भी थे और कहानीकार भी। किसी ने रिपोर्टिंग की, किसी ने कैमरा संभाला, किसी ने खबर लिखी, किसी ने आवाज दी और किसी ने मंच से पूरे आयोजन को जोड़ा। अभ्युदय ने हमें यह भी समझाया कि विश्वविद्यालय केवल डिग्री पाने की जगह नहीं, बल्कि सपनों को दिशा देने वाली एक कार्यशाला है।

तीन दिन कब बीत गए, पता ही नहीं चला। शुरुआत में जो परिसर नए विद्यार्थियों के लिए अनजान था, वही तीन दिनों बाद अपना सा महसूस होने लगा। शायद यही अभ्युदय की सबसे बड़ी सफलता रही कि ये विद्यार्थियों को बस कैंपस से परिचय ही नहीं कराया, बल्कि हमेशा हमेशा के लिए जोड़ दिया।

अभ्युदय 2026 समाप्त हो गया, लेकिन अपने पीछे कई यादें, कई सीख और सबसे जरूरी आगे बढ़ने का विश्वास छोड़ गया। यह सिर्फ तीन दिनों का कार्यक्रम नहीं था, ये उस यात्रा की पहली सीढ़ी था, जिस पर कदम रखकर हम आने वाले कल की ओर बढ़ रहे हैं।

अभ्युदयः
अनुभव का नया अध्याय और पत्रकारिता की ज़मीनी सीख

अक्षय जैन, 1 MA BJ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

अभ्युदय 2026 की शुरुआत हम सबके लिए किसी नए अध्याय के पहले पन्ने जैसी थी। नए चेहरे थे, नई उम्मीदें थीं और मन में भविष्य को लेकर कई सवाल थे। ऐसा लगा मानो विश्वविद्यालय ने न केवल अपना सेमेस्टर शुरू किया है, बल्कि हमारे जीवन के अगले अध्याय भी शुरू कर दिए हैं। जैसे विश्वविद्यालय ने हमारे सामने सिर्फ अपना परिसर नहीं, बल्कि संभावनाओं की एक पूरी दुनिया खोल दी हो।

अभ्युदय का मंच उन तीन दिनों में एक ऐसे दर्पण में बदल गया, जिसमें हमने अपने आज के साथ-साथ अपने आने वाले कल की तस्वीर भी देखी। इस दर्पण में सबसे खूबसूरत तस्वीर थे हमारे alumni, वे लोग जिन्होंने कभी इसी विश्वविद्यालय की कक्षाओं में बैठकर अपने सपने देखे थे और आज अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुके हैं।

कार्यक्रम को और खास बनाया देश और प्रदेश की जानी-मानी हस्तियों की मौजूदगी ने। भोपाल के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का हम विद्यार्थियों के बीच आना और हमारा उनके विचार सुनना एक महत्वपूर्ण अनुभव रहा। वहीं प्रसिद्ध लेखक पीयूष मिश्रा ने अपनी बातों से सभागार में रंग भर दिया। लेकिन अभ्युदय की असली खूबसूरती सिर्फ मंच पर नहीं थी। असली कहानी तो मंच के पीछे लिखी जा रही थी। मीडिया के विद्यार्थियों के लिए ये तीन दिन किसी जीवंत न्यूज़रूम से कम नहीं थे। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग ने हर दिन की गतिविधियों को बुलेटिन का रूप दिया।

जर्नलिज्म विभाग ने, आयोजन की खबरों और गतिविधियों को समाचार-पत्र के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया। वहीं रेडियो विभाग ने 'कर्मवीर' के लिए प्रसारण तैयार किया। यानी अभ्युदय की कहानी केवल मंच पर कही नहीं गई, बल्कि कैमरे, कागज और आवाज तीनों माध्यमों से दर्ज की गई।

अगर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कैमरा था, तो जर्नलिज्म उसकी कलम और रेडियो उसकी आवाज। और इन तीनों ने मिलकर अभ्युदय की कहानी को एक ऐसा मीडिया कैनवास दिया, जिस पर हर दिन एक नया अनुभव रंग भर रहा था। मीडिया कवरेज का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा रहा एलुमनाई पॉडकास्ट। विद्यार्थियों को पूर्व विद्यार्थियों से सीधे और अनौपचारिक संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ। पॉडकास्ट के जरिए विद्यार्थियों ने अपने एलुमनाई की यात्रा, उनके अनुभव, चुनौतियों और मीडिया क्षेत्र से जुड़े उनके विचारों को विस्तार से समझा।

इस आयोजन की सबसे बड़ी खूबसूरती यही रही कि विद्यार्थी यहां सिर्फ दर्शक बनकर नहीं आए थे। हम इस कहानी के किरदार भी थे और कहानीकार भी। किसी ने रिपोर्टिंग की, किसी ने कैमरा संभाला, किसी ने खबर लिखी, किसी ने आवाज दी और किसी ने मंच से पूरे आयोजन को जोड़ा। अभ्युदय ने हमें यह भी समझाया कि विश्वविद्यालय केवल डिग्री पाने की जगह नहीं, बल्कि सपनों को दिशा देने वाली एक कार्यशाला है।

तीन दिन कब बीत गए, पता ही नहीं चला। शुरुआत में जो परिसर नए विद्यार्थियों के लिए अनजान था, वही तीन दिनों बाद अपना सा महसूस होने लगा। शायद यही अभ्युदय की सबसे बड़ी सफलता रही कि ये विद्यार्थियों को बस कैंपस से परिचय ही नहीं कराया, बल्कि हमेशा हमेशा के लिए जोड़ दिया।

अभ्युदय 2026 समाप्त हो गया, लेकिन अपने पीछे कई यादें, कई सीख और सबसे जरूरी आगे बढ़ने का विश्वास छोड़ गया। यह सिर्फ तीन दिनों का कार्यक्रम नहीं था, ये उस यात्रा की पहली सीढ़ी था, जिस पर कदम रखकर हम आने वाले कल की ओर बढ़ रहे हैं।

अभ्युदयः इस बार कहानी मंच पर नहीं, मंच के पीछे भी थी

अभिराज मिश्रा, 5 BAJCW पत्रकारिता विभाग

कुछ अनुभव तस्वीरों में नहीं आते। वे किसी माइक के अचानक बंद हो जाने, किसी अनपेक्षित प्रश्न, किसी अधूरी पंक्ति को वहीं पूरा कर देने और मंच से उतरते हुए भीतर उठी उस छोटी-सी आवाज़ में दर्ज होते हैं,'हाँ, आज कुछ सीखा है।' मेरे लिए अभ्युदय की ऐसी ही एक स्मृति पिछले वर्ष की है। अभ्युदय 2025 में, द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी के रूप में, मैं प्रिंट कवरेज की टीम को सह-नेतृत्व दे रहा था। मुख्य अतिथि कुमार विश्वास से बातचीत और उनका बाइट लेना मेरे लिए उस वर्ष का सबसे बड़ा हासिल था। तब लगा था कि इससे बड़ा अभ्युदय शायद ही कुछ हो। लेकिन विश्वविद्यालय शायद हमें हमारी ही धारणाएँ तोड़ने के लिए शिक्षित करता है। अभ्युदय 2026 तक आते-आते हम 'जूनियर' नहीं रहे थे। हम लगभग अंतिम वर्ष की दहलीज़ पर खड़े वे विद्यार्थी थे, जिन्हें अब केवल सीखना नहीं, कुछ संभालना भी था। इस बार मैंने प्रिंट से विराम लेकर डिजिटल कवरेज की कमान संभाली और रिपोर्टर्स की एक टीम के साथ काम किया। मगर इस अभ्युदय ने मेरी भूमिका को न्यूज़रूम से उठाकर मंच तक पहुँचा दिया विश्वविद्यालय के अलग-अलग हिस्सों से विद्यार्थियों को एंकरिंग, सत्र-संचालन और अतिथियों व पूर्व विद्यार्थियों के साथ पॉडकास्ट के लिए चुना गया। मेरा चयन एंकरिंग और पॉडकास्ट, दोनों के लिए हुआ। दुष्यंत संग्रहालय, रविंद्र भवन और मानस भवन जैसे मंचों पर संचालन कर चुका था, लेकिन अपने विश्वविद्यालय के मंच पर खड़ा होना अलग था। यहाँ मंच अपना था, दर्शक अपने थे और अपेक्षाएँ भी अपनी। फिर मंच पर वही हुआ, जो किसी स्क्रिप्ट में नहीं लिखा होता। तकनीकी अड़चनें आईं। समय बदला। परिस्थितियाँ बदलीं। और हमें भी उनके साथ बदलना पड़ा। वहीं समझ आया कि संचालन केवल शब्दों को खूबसूरती से बोल देना नहीं है; असली संचालन तो तब शुरू होता है, जब शब्द साथ छोड़ दें और आपको क्षण को संभालना पड़े।

अभ्युदय 2026 की सबसे खूबसूरत बात यही थी कि यह केवल 'विश्वविद्यालय का कार्यक्रम नहीं रहा,यह विद्यार्थियों का अपना आयोजन बन गया।' मंच से लेकर मीडिया तक, कवरेज से लेकर समन्वय तक, अनेक जिम्मेदारियाँ विद्यार्थियों ने अपने कंधों पर उठाईं। और पूर्व विद्यार्थियों की यात्राएँ, वे तो जैसे विश्वविद्यालय की अपनी स्मृतियों के जीवित अध्याय थे। उनकी कहानियों में संघर्ष था, ठहराव था, उड़ान थी और सबसे बढ़कर, लौटकर अपने विश्वविद्यालय को कुछ देने की भावना थी। इस बार अभ्युदय ने मुझे कोई एक उपलब्धि नहीं दी। उसने मुझे एक भरोसा दिया, ₹कि अब मंच पर खड़े होने से अधिक जरूरी है, मंच को संभाल पाने का साहस रखना।₹ शायद इसी वजह से अभ्युदय 2026 मेरे लिए एक कार्यक्रम की स्मृति नहीं, बल्कि आगे की यात्रा के लिए मिली एक छोटी-सी, मगर बेहद जरूरी रिहर्सल है।

संघर्ष और उपलब्धि का अभ्युदय

अनन्त वशिष्ठ, 3B.Sc, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग

सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न थे, जो अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय थे। उसी प्रकार अनेक रत्न 'अभ्युदय 2026' में भी देखने को मिले। 35 वर्षों की इस अमिट यात्रा में माखनलाल जी की कार्यशाला से गढ़े गए विभिन्न रत्न आज समस्त विश्व में अपना प्रकाश फैला रहे हैं। कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी के नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिवार ने इस ऊर्जा को एक मंच पर लाने का पुनीत कार्य किया। 'मैं और मेरा विश्वविद्यालय' शीर्षक के अंतर्गत 50 से अधिक पूर्व विद्यार्थियों ने नवागत विद्यार्थियों के साथ अपने संघर्ष और उपलब्धियों की गाथा साझा की।

हम अक्सर सफलता को केवल उसके अंतिम पड़ाव—पुरस्कार, पदवी, पैसा और पहचान—के रूप में देखते हैं, किंतु उस तक पहुँचने की यात्रा को विस्मृत कर देते हैं। सत्य यह है कि संघर्ष कोई बाधा नहीं, बल्कि स्वयं उपलब्धि का आधार-तत्व है। जिस प्रकार समुद्र मंथन में अमृत से पूर्व विष निकला था, उसी प्रकार जीवन में भी संघर्ष का विष पहले आता है; जो इसे धैर्यपूर्वक आत्मसात कर लेता है, वही अंततः उपलब्धि का अमृत पाता है। संघर्ष और उपलब्धि एक-दूसरे के पूरक हैं। माननीय कुलगुरु जी का यह कथन—₹मंदिरों के शिखर सबको दृष्टिगोचर होते हैं, पर नींव में गड़े पत्थर नजर नहीं आते₹—अभ्युदय 2026 के मूल भाव को स्पष्ट करता है। इन तीन दिवसों में उसी संघर्ष रूपी नींव के पत्थरों के महत्व को समझना मेरे लिए अत्यंत आवश्यक रहा।

उद्घाटन सत्र में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं विश्वविद्यालय महापरिषद के अध्यक्ष डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारे लिए 'न्यूज से ऊपर नेशन' होना चाहिए और हम राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखें। उन्होंने श्रेष्ठ संचारक के रूप में देवर्षि नारद का दृष्टांत दिया। वहीं कुलगुरु जी ने युवाओं को नकारात्मकता से सदैव दूर रहने का संदेश दिया। विश्वविद्यालय प्रतिनिधि के रूप में इस कार्यक्रम को कवर करते हुए मुख्यमंत्री जी को इतने निकट से देखना और कैमरे में कैद करना एक अद्भुत अनुभव रहा। दूरदर्शन न्यूज़ के एंकर श्री पराक्रम सिंह शेखावत की ओजस्वी वाणी ने सबका मन मोह लिया; उनसे व्यक्तिगत भेंट और प्रश्न पूछने का अवसर मेरे लिए अविस्मरणीय रहा। जिस संघर्ष की गाथा हम मंच से सुन रहे थे, उसी का व्यावहारिक अनुभव हम पत्रकारिता के दायित्वों के जरिए कर रहे थे—कोई 'विकल्प' के लिए रिपोर्ट लिख रहा था, कोई 'रेडियो कर्मवीर' के लिए बाइट ले रहा था, तो कोई 'MCU दर्शन' के लिए वीडियो बुलेटिन तैयार कर रहा था। मुझे 'टीवी9 भारतवर्ष' के डिप्टी एडिटर श्री रवि मिश्रा के साथ पॉडकास्ट करने का सुअवसर मिला। वहीं वरिष्ठ पत्रकार श्री आशुतोष कुमार सिंह के साथ हुई सहज चर्चा विश्वविद्यालय के आत्मीय संस्कारों को दर्शाती है। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ श्री अभिषेक बेहरा के साथ सूचना सुरक्षा के आयामों पर सार्थक विमर्श हुआ; कार्यक्रम का प्रत्येक सत्र ऊर्जा से ओत-प्रोत था। आशा है कि आगामी सत्रों में हमें श्री अजीत डोभाल और सुश्री पालकी शर्मा उपाध्याय जैसे प्रखर व्यक्तित्वों को भी सुनने का अवसर मिलेगा।

आज वैश्विक विमर्श में भारत की युवा शक्ति को 'जेन-ज़ी' जैसे सांचों में बांधा जा रहा है, जिसका मुख्य कारण समय को एक सीधी रेखा (रैखिक) के रूप में देखना है। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान-विज्ञान परंपरा में समय चक्रीय है, जहाँ पीढ़ियों को खंडित रूप में नहीं बल्कि एक 'सातत्य' (निरंतरता) के रूप में देखा जाता है। यही कालचक्र विश्वविद्यालय के गणेश शंकर विद्यार्थी सभागार में साक्षात परिलक्षित हुआ, जहाँ आज मंच पर वह पीढ़ी विराजमान थी, जो कभी इन्हीं सभागारों की दीर्घाओं में बैठा करती थी।

अभ्युदयः
चेतना का उन्मेष और नव-अनुष्ठान

आदर्श तिवारी, परास्नातक, जनसंचार विभाग

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पावन प्रांगण में प्रवेश पाना ही वस्तुतः सफलता के प्रथम सोपान पर आरूढ़ होने की उद्घोषणा है। इसी उदात्त भाव-भूमि पर, हम नवागत साधकों के लिए तीन दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम 'अभ्युदय 2026' आयोजित हुआ। 'अभ्युदय'—यह शब्द केवल एक आयोजकीय शीर्षक मात्र नहीं, अपितु भारतीय दर्शन का वह सनातन संकल्प है जहाँ व्यक्ति अपने सर्वांगीण उत्कर्ष, चरित्र-बल और विवेक की सिद्धि की ओर अग्रसर होता है।

'अभि' उपसर्ग और 'उदय' शब्द के पावन संगम से निर्मित इस पद का शाब्दिक एवं आध्यात्मिक अर्थ है—'सर्वतोभावेन अभ्युत्थानम्' अर्थात जीवन के प्रत्येक आयाम में चारों दिशाओं से सम्यक उत्कर्ष।

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः"(अर्थात जिससे लौकिक उन्नति और पारलौकिक कल्याण की सिद्धि हो, वही धर्म है।)

यह उन्मुखीकरण कार्यक्रम वस्तुतः इसी शास्त्र-सम्मत विचार की सजीव पुनरावृत्ति था।इस त्रि-दिवसीय वैचारिक महायज्ञ की महत्ता तब और अधिक अनुपम तथा आनंददायी हो उठी, जब हमने देखा कि जिन प्रतिष्ठित वरिष्ठ पत्रकारों, विचारकों और विशेषज्ञों का ओजस्वी प्रबोधन हमें प्राप्त हुआ, वे कोई अन्य नहीं बल्कि इसी ज्ञान-पीठ की माटी से उपजे हमारे अग्रज थे। जो कल तक इन्हीं गलियारों में जिज्ञासा और संकल्प के दीप प्रज्वलित कर रहे थे, वे आज समाज और देश के श्रेष्ठ मंचों पर अपनी मेधा का परचम लहरा रहे हैं।

इस आनंद की पराकाष्ठा तब सिद्ध हुई, जब विश्वविद्यालय के सर्वोच्च पद पर आसीन हमारे श्रद्धेय कुलगुरु प्रो. विजय मनोहर तिवारी स्वयं इसी संस्थान के पूर्व छात्र के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित थे। एक पूर्व विद्यार्थी का विश्वविद्यालय के कुलगुरु पद को सुशोभित करना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह संस्था केवल पत्रकारों का निर्माण नहीं करती, अपितु विचार-जगत को नेतृत्व प्रदान करने वाले युग-निर्माताओं को गढ़ती है। जब वर्तमान के पथ-प्रदर्शक स्वयं अतीत के उसी धरातल से उपजे हों, तो नवागतों का विश्वास पर्वत-सा सुदृढ़ हो जाता है।

अनुष्ठान के प्रथम दिवस का भव्य उद्घाटन मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार पीयूष मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। मुख्यमंत्री जी ने नवागतों का आह्वान करते हुए कहा कि आज 'फेक न्यूज़' के इस युग में हमें 'नेक न्यूज़' का ध्वजवाहक बनना होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि पत्रकारिता में सत्ता का विरोध स्वीकार्य है, किंतु राष्ट्र-विरोध कदापि नहीं; हमारे लिए न्यूज़ से ऊपर 'नेशन' होना चाहिए।

इसी क्रम में कुलगुरु जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में यह पाथेय दिया कि जीवन में यदि किसी का हित न कर सकें तो उसके मार्ग में बाधक भी न बनें, और इतिहास के नकारात्मक प्रसंगों से सीख लेते हुए कुसंगति का त्याग करना ही सच्चा मार्ग है। वहीं 'टॉक शो' के माध्यम से पीयूष मिश्रा ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि जहाँ राजनीति समाप्त होती है, वहीं से अध्यात्म प्रारंभ होता है; अतः युवाओं को स्वामी विवेकानंद और भगत सिंह की वैचारिकता को आत्मसात करते हुए विशिष्ट (एक्स्ट्रा-ऑर्डिनरी) बनकर निरंतर पठन-पाठन से जुड़े रहना चाहिए।

द्वितीय दिवस 'मैं और मेरा विश्वविद्यालय' के आत्मीय भाव को समर्पित रहा, जहाँ देश-विदेश में कार्यरत पूर्व विद्यार्थियों ने अपनी जीवन-यात्रा साझा की। वरिष्ठ पत्रकारों और तकनीकी विशेषज्ञों ने नवागतों को स्पष्ट संदेश दिया कि पत्रकारिता में तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) केवल सहायक उपकरण हैं, वे आपकी मौलिकता और रचनाधर्मिता का स्थान कभी नहीं ले सकते। उन्होंने समझाया कि सत्य, तथ्य और कृत्य ही पत्रकारिता के शाश्वत आधार हैं, और जब तक स्वाध्याय, सतत भ्रमण तथा लोक-संपर्क नहीं होगा, तब तक निष्पक्षता संभव नहीं है।

तृतीय दिवस पर बिजनेस, डिफेंस और डिजिटल मीडिया के दिग्गजों ने यह बोध कराया कि पत्रकारिता ग्लैमर का क्षेत्र नहीं, अपितु गहन सामाजिक उत्तरदायित्व का माध्यम है। समापन समारोह के मुख्य अतिथि, राज्यसभा सांसद एवं विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र श्री रजनीश अग्रवाल ने रेखांकित किया कि पत्रकारिता केवल एक उपाधि (डिग्री) नहीं, बल्कि समाज को देखने और समझने की सूक्ष्म दृष्टि है, जहाँ अंततः नैतिक मूल्यों और संवाद-कौशल की ही विजय होती है।

तीन दिनों के इस वैचारिक अनुष्ठान की पूर्णता के उपरांत हमारा अंतःकरण विनम्रता और कृतज्ञता के भाव से सिक्त है। हम आदरणीय कुलगुरु जी, विश्वविद्यालय प्रशासन, समस्त गुरुजनों एवं वरिष्ठ अग्रजों के प्रति हृदय से साधुवाद ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपने अनुभवों के अमृत-कणों से हमें सिंचित किया। किसी भी नवागत शिक्षार्थी के लिए अपनी ज्ञान-यात्रा का शुभारंभ ऐसे प्रेरक वातावरण में होना परम सौभाग्य का विषय है